International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 1; January 2018; Page No. 669-671

प्रेमचंद जी के साहित्य प्रेम का आदर्श रूप

चन्द्रसैन
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र, हरियाणा, भारत।

प्रस्तावना

प्रेमचंद जी के साहित्य में प्रेम के भिन्न–भिन्न रूपों का वर्णन हमें पढ़ने को मिलता है। प्रेमचंद जी ने इन रूपों में से आदर्श–रूप की संकल्पना करके सुधि पाठकों का मागदर्शन किया है। व्यक्ति तथा व्यक्ति व व्यक्ति तथा समाज के संबंधों को सुदृढ़ करने का श्रेय प्रेम को ही दिया जा सकता है। इस लेख में मुख्यतः हम इनके साहित्य में नारी–प्रेम के आदर्श रूप का अध्ययन करेंगे। प्रेम का संचार तीन स्तरों मानसिक, शारीरिक व आत्मिक पर होता है। आत्मिक स्तर पर यह प्रेम पवित्र होकर आत्मोन्नति का मार्ग प्रशस्त करता है। दैहिक और मानसिक स्तर पर इसमें अनेक दुर्भावनाएं आकर इसे हिंसा, प्रतिरोध व स्वैच्छाचारी भी बना देती है। प्रेमचंद जी ने नारी के विभिन्न प्रेम संबंधों–प्रेम, मैत्री, दाम्पत्य और मुक्तभोग में से दाम्पत्य को ही आदर्श माना है। प्रेम तथा मुक्त भोग को उनके साहित्य में नगण्य स्थान ही मिला। प्रेम मानवीय गुणों के उदात्त रूप होने के कारण पवित्र व शुद्ध होने के कारण त्याग, बलिदान, दया, क्षमा आदि गुणों से युक्त होता है। विशुद्ध एवं आदर्श प्रेम में प्रतिशोध और हिंसा का अभाव होता है। 'कायाकल्प' में प्रेमचंद जी ने कहा है, "प्रेम हृदय के समस्त उद्भवों का शांत, स्थिर, उद्गारहीन समवाय है। उसमें दया और क्षमा, श्रद्धा और वात्सल्य, साहनुभूति और सम्मान, अनुराग और विराग, अनुग्रह और उपकार सभी मिले होते हैं। इनमें से कोई एक भाव प्रेम को अंकुरित कर सकता है। उसका विकास अन्य भावों के मिलने से ही होता है।"[1] प्रेम की सार्थकता त्याग व बलिदान में ही होती है। 'दो सखिया' कहानी की चंदा कहती है– "प्रेम का एक ही मूल मंत्र है, वह है सेवा। प्रेम का अंकुर रूप में है पर उसको पल्लवित और पुष्पित करना सेवा का ही काम है।"[2] 'दो सखियाँ' कहानी की पद्मा के अनुसार, "वह प्रेम, प्रेम नहीं जो प्रत्याघात की शरण ले। प्रेम का आदि सहृदयता है और अंत भी सहृदयता है।"[3] प्रेमचंद जी की नारी पुरुषों के सद्गुणों से प्रभावित होकर उनके प्रति सम्मान का भाव रखती हैं जो अनुकूल परिस्थितियों में प्रेम में परिणत हो जाता है। 'ऐक्ट्रेस' कहानी की तारा कुँवर साहब के तेजस्वी व्यक्तित्व से प्रभावित होती है किंतु कुँवर साहब से अपने अभिनय की प्रशंसा सुनने तथा प्रतिदिन मिलने के कारण प्रेम करने लगती है।

'वेश्या' कहानी की माधुरी का प्रेम भी इसी प्रकार का है। दयाशंकर की आँखों में निश्छल समर्पण का भाव देखकर ही वह उनके प्रति आकृष्ट होती है। व्यक्ति–सुख वाले प्रेम की अपेक्षा प्रेमचंद जी प्रेम को समाज–सापेक्ष अधिक मानते हैं। समाज–सापेक्ष प्रेम को ही वे अधिक वरेण्य मानते हैं। जिस प्रेम का अंत विवाह न हो उसे प्रेमचंद जी निंदनीय व वासनात्मक मानते हैं। 'गोदान' में वे कहते हैं, "प्रेम जब आत्मसमर्पण का रूप लेता है, तभी ब्याह है, उसके पहले ऐयाशी है।"[4] विवाह–पूर्व प्रेम में शारीरिक संबंधों को प्रेमचंद जी उचित नहीं मानते। विवाह–पूर्व शारीरिक संबंधों की परिणति विफलता में ही प्रेमचंद जी ने अपने साहित्य में चित्रित की है। 'तयागी का प्रेम' की आनंदीबाई विवाह–पूर्व माँ बनने के कारण लोकापवाद झेलती है। नौकरी से निकाले जाने पर वह निर्धनता व मानसिक यंत्रणा के भीषण दौर से गुजरती है। 'मिस पद्मा' कहानी की पद्मा अपने प्रेमी से विवाह–पूर्व संबंध बनाती है। वह अपने प्रेमी की कलुषित मानसिकता को समझ नहीं पाती और उसकी अवैध संतान का पालन–पोषण करने को बाध्य हो जाती है। प्रेमचंद जी की अधिकांश प्रेमिकाएँ मर्यादित जीवन जीती है। वे शारीरिक संबंधों से दूर ही रहती हैं। 'हार की जीत' कहानी की लज्जा प्रेम व विवाह को भावनात्मक संबंध ही नहीं मानती अपितु अपने प्रेमी के अपेक्षित आचरण तक पहुँचने तक विवाह करना वह उचित नहीं मानती।

'हार की जीत' कहानी में लज्जा के त्याग और सेवा से प्रभावित होकर ही सुशीला स्वयं मार्ग से हट जाती है। इसी प्रकार 'दो सखियाँ' कहानी में कुसुम पद्मा के जीवन को सुखी बनाने के लिए विनोद के मार्ग से हट जाती है। वास्तव में त्याग व सेवा ही प्रेम की कसौटी है। प्रेमचंद जी प्रेम को नवीन ज्योति प्रकाशित करने वाला मानते हैं। वे उसे कामुक व वासनात्मक नहीं मानते। प्रतिशोध व हिंसा युक्त अनुबंधित प्रेम को वे प्रेम नही मानते। "जहाँ एक बार प्रेम ने वास किया वहाँ उदासीनता और विराग चाहें पैदा हो जाएँ, हिंसा का भाव पैदा नहीं हो सकता।"[5] प्रेम में वे समर्पण के भाव को ही प्रमुखता देते हैः– "मैं प्रेम को संदेह से ऊपर समझती हूँ।[6] यह देह की वस्तु नहीं, आत्मा की वस्तु है। वह पूर्ण आत्मसमर्पण है।" प्रेमचंद जी के नारी–केंद्रित साहित्य में प्रेम के पवित्र पक्ष के साथ–साथ वासनात्मक पक्ष का भी सटीक चित्रण मिलता है। उन्होंने आदर्श प्रेम के साथ–साथ प्रेम के विकृत पक्ष के वर्णन में भी अपनी लेखनी का सुदृढ़ प्रयोग किया है। प्रेमचंद जी ने मानवीय गुणों से युक्त सामाजिक–नैतिक प्रतिबंधों को स्वीकृति प्रदान की है तो मनोवैज्ञानिक स्तर पर इनकी अभिव्यक्ति को यथार्थ व आदर्श दोनों ही प्रकार से चित्रित किया है। प्रेम के उज्जवल पक्ष के साथ इसके वासनायुक्त कलुषित पक्ष का भी वर्णन किया है।

प्रेम के आदर्श रूप का वर्णन करने के लिए प्रेमचंद जी ने एकनिष्ठता, त्याग सेवा, कर्तव्यनिष्ठा आदि गुणों का समायोजन भी अति आवश्यक माना है। प्रेमचंद जी की 'लैला', 'ज्योति', 'धोखा', 'त्यागी का प्रेम' आदि कहानियों की चरितनायिकाएँ अपने प्रेमियों के प्रति एकनिष्ठ रहती हैं तथा अपने प्रेमियों के लिए समर्पित होकर सर्वस्व बलिदान के लिए भी सदैव तत्पर रहती हैं। कुछ का प्रेम सफल होकर दाम्पत्य के रूप में परिणति पाता है तो कुछ का सामाजिक वर्जनाओं, मर्यादाओं व नैतिकता के कारण सफल नहीं हो पाता। उन्हें किसी अन्य से विवाह करना पड़ता है। कुछ को सामाजिक रूढ़ियों के कारण अत्यंत पीड़ादायक जीवन जीने के मजबूर होना पड़ता है। इनमें से अधिकांश को आत्महत्या करनी पड़ती है। ये सारी स्थितियाँ दिखाकर प्रेमचंद जी ने प्रेम के आदर्श

रूप को ही स्वीकार्य किया है, जिसकी परिणति विवाह को माना है। 'ज्योति' कहानी की रूपिया प्रेमाकर्षण की प्रारंभिक अवस्था की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। मोहन के प्रति उसके रूप पर मुग्ध होकर वह उससे प्रेम करने लगती है। शुरू में उनके प्रेम संबंध को स्वीकार न करने वाली मोहन की माँ अंत में उसके त्याग, ममता व निश्छलता के कारण उसे अपनी बहू के रूप में स्वीकार कर लेती है। 'त्यागी का प्रेम' की नायिक आनंदीबाई लाला गोपीनाथ से सच्चा प्रेम करती है। वह प्रेम पर स्वयं को बलिदान करने के लिए भी तत्पर रहती है। शारीरिक कमजोरी के कारण आनंदीबाई विवाह–पूर्व ही सतमासे बच्चे को जन्म दे देती है। लोकापवाद से बचने के लिए उसका प्रेमी गोपीनाथ उसके यहाँ जाना भी बंद कर देता है। आनंदी बाई को नौकरी से निकाल दिया जाता है। वह अत्यंत निर्धनता के दौर से गुजरती है। वह भीषण शारीरिक व मानसिक यंत्रणा झेलती है परन्तु उसके मन में गोपीनाथ के प्रति किसी प्रकार की दुर्भावना नही आती। आखिरकार गोपीनाथ उसके पास जाते हैं और उसे स्वीकार करते हुए कहते हैं, "अब मुझे विदित हो गया कि मेरी सारी दार्शनिकता हाथी का दाँत थी। मुझमें क्रियाशक्ति नहीं है लेकिन इसके साथ ही तुमसे अलग रहना मेरे लिए असहाय है। तुमसे दूर रहकर मैं जिंदा नहीं रह सकता, मेरे प्यारे बच्चे को देखने के लिए मैं कितनी ही बार ललायित हो गया हूँ, पर यह आशा कैसे करुँ कि मेरी चरित्रहीनता का ऐसा प्रत्यक्ष प्रमाण पाने के बाद तुम्हें मुझसे घृणा न हो गई होगी।"[7] इस प्रकार उनमें वैवाहिक संबंध न बनने पर भी प्रेम रहता है। वरदान में प्रेमचंद जी ने लिखा है– "सच्चे प्रेम का कमल बहुधा कृपा के प्रभाव से खिल जाया करता है। जहाँ रूप, यौवन, संपत्ति और प्रभुता तथा स्वाभाविक सौजन्य प्रेम का बीज बौने में अकृत कार्य रहते हैं, वहाँ प्रायः उपकार का जादू चल जाता है। कोई हृदय ऐसा वज्र और कठोर नहीं हो सकता, जो सत्य–सेवा से द्रवीभूत न हो जाए।"[8] इस प्रकार आनंदीबाई गोपीनाथ के उपकार के कारण ही उससे घृणा न करके प्रेम ही करती है।

कौमार्यावस्था में किसी को अपना हृदय समर्पित कर देने वाले नारी चरित्रों का नियोजन भी प्रेमचंद जी ने अपने साहित्य में किया है। इन चरित्रों को लोक लाज या सामाजिक मर्यादा के कारण किसी अन्य पुरुष से विवाह करना पड़ता है। ऐसी नायिकाएं भी अपने प्रेम में पूर्ण एकनिष्ठा का परिचय देती है। उनका पूर्व–प्रेम उनके त्याग, सेवा व बलिदान के भावों को सदैव आलोकित करता है। वे अपने पति के प्रति पूर्ण समर्पित रही है। 'मर्यादा की वेदी' कहानी की झालावाड़ कुमारी प्रभा मंदार कुमार से प्रेम करती है, किंतु उनके विवाह से पूर्व ही चितौड़ के राणा भोजराज उसका अपहरण कर लेते हैं। प्रजा को रक्त–पात से बचाने के लिए प्रभा भोजराज के साथ चली जाती है परंतु मानसिक रूप से उन्हें पति के रूप में स्वीकार नहीं कर पाती। जब मन्दार कुमार युवा सन्यासी के रूप में उसके भवन पहुँच उसे साथ चलने को कहता है तो वह यह अमर्यादित आचरण करने से मना करते हुए कहती है, "लोकनिंदा भी तो कोई चीज है। संसार की दृष्टि में मैं चितौड़ की रानी हो चुकी। अब राजा जिस भाँति रखें उसी भाँति रहूँगी। मैं अंत समय तक उनसे घृणा करुँगी, जलूँगी, कुढ़ूँगी। जब जलन न सही जाएगी तो विष खा लूँगी या छाती में कटार मारकर मर जाऊँगी, लेकिन इसी भवन में। इस घर के बाहर कदापि पैर न रखूँगी।"[9] 'धोखा' कहानी की नायिका को भी अपने प्रेमी की अपेक्षा अन्य पुरुष से विवाह करना पड़ता है किंतु उसकी स्थिति प्रभा से भिन्न है। वह नौगढ़ के शिक्षित युवा राजा हरिश्चंद की वाग्दाता है। आधुनिक विचारधारा वाले राजा जब किसी भी प्रकार से अपनी वाग्दाता से भेंट नही कर पाते तो अंततः एक युवा योगी गवैये का रूप धारण करते हैं। अपनी पत्नी के संगीत प्रेम से अवगत होने के कारण वे उसे अपने सुरीले गले व मोहिनी द्वारा मोह लेते हैं। जैसे–जैसे विवाह समीप आता है नायिका चिंतित व बेचैन हो उठती है। विवाह के बाद अपने पति के प्रति पूर्ण समर्पित रहते हुए भी वह मानसिक रूप से उद्विग्न रहती है। इस स्थिति में भी पति द्वारा युवा योगी के चित्र के बारे में पूछने पर वह पूर्व–प्रेम कथा सच–सच बताती हैं। एक निष्ठ होते हुए भी कुछ प्रेमिकाएँ अपने प्रेमी के साथ दाम्पत्य सुख नहीं भोग पाती। 'कामना तरू' की नायिका चंदा का प्रेम विश्वास पर ही कायम है। अतः इसमें किसी प्रकार की शिथिलता नहीं है। राजा इंद्रनाथ की मृत्यु के पश्चात् संघर्षों से भागे कुँवर राजनाथ का प्रेम अपने पुराने सेवक व शरणदाता जमींदार कुबेर सिंह की पुत्री चंपा से हो जाता है। दोनों अपने प्रेम के प्रतीक स्वरूप एक पौधा 'कामना–तक' लगाते है और जीवन–भर एक साथ रहने का संकल्प करते हैं। दांपत्य–सूत्र मे बँधने से पूर्व ही कुँवर का अपहरण हो जाता है और उसकी रक्षा के प्रयास में कुबेर सिंह मारा जाता है। दस वर्ष वियोग में काटने के बाद चंदा 'कामना तरु' के नीचे अंतिम सांस लेती है। बीस वर्ष बाद 'कामना तरु' के नीचे एक ग्रामीण द्वारा कुँवर को चंदा के बारे में पता चलता है कि, "दिन–दिन घुलती जाती थी। तुम्हें विश्वास न आएगा भाई, उसने दस साल इसी तरह काट दिए। इतनी दुर्बल हो गई थी कि पहचानी न जाती थी पर अब भी उसे कुँवर साहब के आने की आशा बनी हुई थी। आखिर एक दिन इसी वृक्ष के नीचे उसकी लाशा मिली। ऐसा प्रेम और कौन करेगा भाई! कुँवर न जाने मरे की जीए, कभी उन्हें इस विरहिणी की याद भी आती है कि नहीं पर इसने तो प्रेम को ऐसा निभाया जैसा चाहिए।"[10] प्रेम की पवित्रता व एकनिष्ठा का उदाहरण प्रस्तुत कर चंपा ने मृत्यु को गले लगा लिया था। प्रेम के पथ पर स्वयं का बलिदान कर दिया। खाँडे की धार कहे जाने वाले प्रेम–पथ की वह धीर, गंभीर पथिक थी जिसने अपना सर्वस्व प्रेम के लिए कुर्बान कर दिया।

प्रेमचंद जी के साहित्य में प्रेम की एकनिष्ठता सच्चे प्रेम के लिए अतिआवश्यक मानी है तो साथ ही साथ त्याग, सेवा, कर्तव्यनिष्ठा व सामाजिक मंगल की कामना को भी आवश्यक माना है। 'स्मृति का पुजारी' की मिस इंदिरा पचास वर्षीय विधुर होरीलाल से प्रेम करती है। वह उसके साथ विवाह का प्रस्ताव भी रखती है, "मैं आपकी कुछ सेवा कर सकती हूँ तो हर तरह से हाजिर हूँ, मुझे आपसे जो भक्ति और प्रेम है, वह इसी रूप से चरितार्थ हो सकता है।"[11] होरीलाल के द्वारा प्रस्ताव अस्वीकार कर देने पर भी वह अडिग रहती है। वह कहती है, "जब आपको कोई कष्ट हो और आप मेरी जरूरत समझे तो मुझे बुला लिजिएगा।"[12] निस्थार्थ त्याग, सेवा और कर्त्तव्य–निष्ठा आदर्श प्रेम की अपरिहार्य अर्हताएँ है। इनमें युक्त प्रेमिकाएँ चाहे सफल हो या विफल किंतु उन्हें एक प्रकार का आत्मिक संतोष जरूर है। 'हार की जीत' कहानी की लज्जावती भी इसी प्रकार की प्रेमिका है। विवाह पूर्व वह अपने प्रेमी से शारीरिक संबंध नहीं रखती। अपने प्रेमी के असाध्य गुप्त रोग का पता चलने पर भी वह बिना विवाह किए भी उसके पास रहने को तैयार होकर कहती है, "सावित्री ने क्या सब कुछ जानते हुए भी सत्यवान से विवाह नहीं किया था? फिर मैं क्यों न करूँ? अपने कर्त्तव्य मार्ग से क्यों डिगू? मैं उनके लिए व्रत रखूंगी, तीर्थ करुँगी, तपस्या करुँगी। भय मुझे उनसे अलग नहीं कर सकता।"[13] उसकी सेवावृत्ति, त्याग और बलिदान से प्रभावित सुशीला स्वतः मार्ग से हट जाती है। शारदाचरण भी कहता है, "क्षमा करो, तुम्हारी उदारता की दूसरी बार परीक्षा नहीं लेना चाहता।"[14] 'विश्वास' कहानी की राधिका भी कर्त्तव्यनिष्ठा प्रेमिका है। अपने स्वच्छंद प्रेमी जौहरी के विरोध करने पर आप्टे के विषय में स्पष्ट कह देती है, "वह मेरे स्वामी हैं, मैं

उनको अपना स्वामी समझती हूँ।"[15]

'कायर' कहानी की वैश्य–कन्या अपने ब्राह्मण सहपाठी केशव से प्रेम करती है। केशव प्रेम को मित्रवत् न बनाए रखकर विवाह करना चाहता है। प्रेमचंद जी केशव का परिचय देते हुए कहते हैं, "केशव नए विचारों का युवक था, जात–पाँत के बंधनों का विरोधी। ब्राह्मण होकर भी वैश्य–कन्या से विवाह कर अपना जीवन सार्थक बनाना चाहता था। उसे अपने माता–पिता की परवाह न थी। कुल मर्यादा का विचार भी उसे स्वाँग लगता था।"[16] बाद में केशव पिता द्वारा संपति से वंचित करने की धमकी पर टूट जाता है। प्रेमा केशव के विश्वासघात के कारण आत्महत्या कर लेती है।

'प्रेम की होली' में ठाकुर गरीब सिंह युवती विधवा गंगी से प्रेम करते हैं पर समाज में लोकनिंदा के कारण विवाह करने की हिम्मत नहीं जुटा पाते। रोगी होकर मृत्यु को प्राप्त होते हैं। यहाँ भी प्रेमचंद जी समाज भय के कारण असफल प्रेम दिखाते हैं। बाद में प्रेमचंद जी 'सौभाग्य के कोड़े' कहानी में अपना परिवर्तित दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं। भंगी नथुआ को न. रा. आचार्य बनाकर राय भोलानाथ की पुत्री रत्ना से उसका विवाह करवाया है। रत्ना प्रेम को जाति से ऊँचा मानती है। वह बाल्यकाल में ही अछूत नथुआ के प्रति दया–भाव से उपजे प्रेम को यौवनावस्था में शुद्ध–प्रेम के रूप में पहचान जाती है। 'वेश्या' कहानी में दृयाकृष्ण माधुरी से प्रेम करने लगता है परन्तु एक वेश्या को पत्नी के रूप में स्वीकार करने का मनोबल उसमें नहीं है। माधुरी उसके विश्वासघात से आत्महत्या कर लेती है। अतः प्रेमचंद जी ने कड़े सामाजिक बंधनों के कारण प्रेम को अपनी अंतिम मंजिल तक पहुँचते बहुत कम दिखा है। समाज की मंगल कामना, सेवा, त्याग बलिदान को ही प्रेम के लिए अपरिहार्य माना है। ऐसा प्रेम ही उनकी दृष्टि में आदर्श प्रेम है।

संदर्भ सूची

1. प्रेमचंद, कायाकल्प, पृष्ठ–208
2. प्रेमचंद, मानसरोवर भाग – 4, पृष्ठ–260
3. प्रेमचंद, मानसरोवर भाग–4, पृष्ठ–267
4. प्रेमचंद, गोदान, पृष्ठ–147
5. प्रेमचंद, गोदान, पृष्ठ–147
6. प्रेमचंद, गबन, पृष्ठ–299
7. प्रेमचंद, मानसरोवर भाग – 6, पृष्ठ–38
8. प्रेमचंद, वरदान, पृष्ठ–85
9. प्रेमचंद, मानसरोवर भाग – 6, पृष्ठ–95
10. प्रेमचंद, मानसरोवर भाग – 5, पृष्ठ–63
11. प्रेमचंद, मानसरोवर भाग – 4, पृष्ठ–255
12. प्रेमचंद, मानसरोवर भाग – 4, पृष्ठ–256
13. प्रेमचंद, मानसरोवर भाग – 8, पृष्ठ–141
14. प्रेमचंद, मानसरोवर भाग – 8, पृष्ठ–146–147
15. प्रेमचंद, मानसरोवर भाग – 3, पृष्ठ–29
16. प्रेमचंद, मानसरोवर भाग – 1, पृष्ठ–188